आदर्श समाज

एस.एन. पाल
राजभाषा अधिकारी

हर देश और काल में लोग अपने जीवन से असंतुष्ट रहते हैं। इसलिए सामाजिक चिंतकों ने समय-समय पर एक आदर्श समाज की कल्पना प्रस्तुत की, जिसमें सब सुखी और संतुष्ट रहें। सत्य, न्याय, सौंदर्य आदि को मूर्त रुप देने के लिए समाज की आवश्यकता है। यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो ने ऐसे समाज की कल्पना की है जो हमें उसके आदर्श राज्य में मिलता है। प्लेटो ने आदर्श समाज को तीन भागों में बाँटा है। पहले भाग में दार्शनिक लोग आते हैं जो विचारक का काम करते हैं। इन्हें प्लेटो ने संरक्षक की संज्ञा दी है। वे एक इसी वर्ग का काम है। दूसरे वर्ग में योद्धा हैं जो प्लेटो के शब्दों में समाज रुपी शरीर के ह्रदय हैं। तीसरे वर्ग में व्यापारी, कृषक, कामगार, नौकर-चाकर और दास लोग आते हैं जो समाज रुपी शरीर के निम्न अंगों के द्योतक हैं। इनका काम ऊपर के दो वर्गों की आज्ञा का पालन करना है।

ये तीनों वर्ग पुश्तैनी नहीं थे। योग्यता के अनुसार कोई भी किसी वर्ग का सदस्य हो सकता था। प्लेटो के सामने यह समस्या थी कि सामाजिक वर्गीकरण को क्रियात्मक स्वरुप किस प्रकार दिया जा सकता था। उसका कहना था कि बच्चों को शुरु से ही यह संस्कार माता-पिता द्वारा दिए जाएंगे तो वे समाज के इस विभाजन को सहर्ष स्वीकार कर लेंगे। समाज में शासन कुछ चुने हुए अभिजात्यों का होगा। सारे समाज के कल्याण की जिम्मेदारी उन्हीं पर होगी। अधिकार के इस दुरुपयोग को रोकने के लिए प्लेटो ने संरक्षक वर्ग पर कुछ प्रतिबंध लगाए, जैसे वे निजी संपति नहीं रख सकते। उनकी साधारण आवश्यकताओं की पूर्ति, और धनाभाव उसे नीच और अपराधी बना देता है। समाज का प्रगतिशील विकास रुक जाता है। लोगों में पैसा जमा करने की प्रवृति हो जाती है और वे धर्म और सदाचार से विमुख हो जाते हैं। जिस समाज में गरीबों की संख्या अधिक है, उस समाज में चोर, डाकू और मुनाफाखोर बड़ी संख्या में होते हैं। गरीबों की संख्या बढ़ने के तीन प्रमुख कारण होते हैं जैसे शिक्षा का अभाव, गलत शिक्षा और अन्यायपूर्ण सामाजिक नियम। प्लेटो ने संरक्षकों और बच्चों के प्रशिक्षण पर काफी बल दिया। स्त्रियों के वैयक्तिक विकास के लिए पूरा अवसर मिलना चाहिए। उन्हें परिवार के लिए ही सारा समय नहीं देना चाहिए अपितु राष्ट्र-निर्माण में भी हाथ बँटाना चाहिए।

प्लेटो के आदर्श समाज की कल्पना में साम्यवाद के कुछ पुट मिलते हैं। सन् 1848 में कार्ल मार्क्स ने संसार के श्रमिकों के नाम एक घोषणापत्र तैयार किया जिसे कम्युनिस्ट मेनीफेस्टो कहा जाता है। उसमें कम्युनिस्ट राज्य में आदर्श समाज की रुपरेखा दी गई है। इस समाज में संपति को उतराधिकार के रुप में कोई प्राप्त न कर सकेगा। देश की सारी भूमि, कारखाने, यातायात-साधनों तथा आर्थिक उत्पादन के सभी उत्पादनों पर श्रमिकों का अधिकार होगा। बिना श्रम के किसी भी व्यक्ति को अनिवार्य रुप से शिक्षा दी जाएगी और उसे योग्यता प्राप्त करने का समान अवसर मिलेगा। शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपनी-अपनी योग्यता और समार्थ्य के अनुसार श्रम करना होगा। हर व्यक्ति को चाहे वह शारीरिक श्रम करे या मानसिक, अपने श्रम का पूरा–पूरा मूल्य दिया जाएगा। ऐसे समाज में वर्ग–संघर्ष का अंत हो जाएगा। समाज में शोषक और शोषित नहीं रह जाएंगे। सिर्फ एक वर्ग मेहनतकशों का रह जाएगा। कार्ल मार्क्स ने भविष्यवाणी की कि संसार की सब घटनाएं इस महान परिवर्तन की ओर निर्देश कर रही हैं और कह रही हैं कि यह परिवर्तन होने जा रहा है।